सूक्तियाँ

मैं न बौद्ध हूँ, न ईसाई, मैं तो सच के साथ हूँ और सच का ही उपदेश देती हूँ। आप इसे बौद्ध आचरण कहें, चाहे ताओवाद, कैथोलिक आचरण अथवा जो भी चाहें कह लें। मेरे यहाँ सभी का स्वागत है।

~परम गुरू माँ चिंग हाई~

मन की शान्ति प्राप्त कर के, हम दूसरी हर चीज प्राप्त कर लेते हैं। सांसारिक और स्वर्गिक कामनाओं की पूर्ण प्राप्ति, सम्पूर्ण सन्तोष परमेश्वर के राज्य से मिलता है। हमारी अनन्त समरसता, हमारी समस्त बुद्धि व विवेक और हमारी सर्वशक्तिमान ऊर्जा की प्राप्ति। यदि हमें ये सब प्राप्त न हों तो हमें कभी भी सन्तोष नहीं मिलेगा, भले ही हमारे पास कितना भी धन, कितनी भी शक्ति हो और हम कितने ही ऊँचे पद पर आसीन हो।

परम गुरू माँ चिंग हाई

हमारी शिक्षा यही है कि आपको इस संसार में जो कुछ करना है, उसे संपूर्ण इच्छाशक्ति के साथ करें। जिम्मेदार बनें और प्रतिदिन चिन्तन-मनन करें। इससे आपको और भी अधिक ज्ञान की प्राप्ति होगी, और अधिक प्रज्ञा, और अधिक शान्ति मिलेगी ताकि आप स्वयं अपनी सेवा कर सकें और साथ ही संसार की भी। यह न भूलें कि आपकी अच्छाई व उत्तमता आपके शरीर में ही उपस्थित है। न भूलें कि परमेश्वर आपके ही अन्दर वास करते हैं। न भूलें कि आपके हृदय में ही बुद्ध का निवास हैं।

~परम गुरू माँ चिंग हाई~

प्रस्तावना

सनातन समय से मानवजाति में ऐसे विरल व्यक्ति जन्म लेते आए हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य मानवजाति की आध्यात्मिक उन्नति रहा है। इनमें ईसा मसीह एक थे, इसी प्रकार शाक्यमुनि, बुद्ध और मुहम्मद थे। इन तीनों को हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं किन्तु अनेक महापुरूष ऐसे हुए हैं, जिनके हम नाम नहीं जानते। इनमें से कुछ ने सार्वजनिक रूप में शिक्षा दी। इन्हें कुछ लोगों ने जाना और कुछ ऐसे भी थे जो गुमनामी में ही रह गए। इन व्यक्तियों को अलग-अलग समय में और अलग-अलग देशों में, अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया गया। इन सभी को गुरू, अवतार, बुद्ध, उद्धारक, मसीहा, माँ, देवदूत, दूत, महाप्राण, सन्त शिरोमणि आदि अनेक नामों से पुकारा गया है। वे हमें बोध, मुक्ति, सिद्धि, परित्राण अथवा जागृति प्रदान करने के लिए अवतरित हुए। भले ही उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किए वे अलग-अलग रहे हों, किन्तु सार रूप में उन सबका तात्पर्य एक ही था। उसी आध्यात्मिक श्रेष्ठता, नैतिक निर्मलता और मानव जाति के उत्थान की शक्ति लिए हुए प्राचीन काल के महात्माओं केस्वरूप, दैवी स्त्रोत से उदबुद्ध आज भी हमारे बीच ऐसे महापुरूष विद्यमान हैं, परन्तु उनकी उपस्थिति को कुछ ही लोग जानते हैं। इन महान आत्माओं में से एक हैं **गुरू माँ चिंग हाई**।

गुरू माँ चिंग हाई व्यापक रूप से मान्य समकालीन सन्त के रूप में अभी उतनी विख्यात नहीं हैं। वे एक स्त्री हैं और अनेक बौद्ध तथा अन्य इसी मिथक में विश्वास करते हैं कि एक नारी बुद्ध पद की प्राप्ति नहीं कर सकती है। वे एशियाई वंश की हैं और अनेक पश्चिमी लोग यह आशा करते हैं कि उनका मुक्तिदाता उनके सादृश्य हो। लेकिन समूचे संसार और विभिन्न धार्मिक आस्था वाले हम में से अनेक लोग, जो इन्हें जान पाये हैं और जो इनकी शिक्षा का पालन करते हैं, यह जानते हैं कि वे कौन हैं और क्या हैं। आप भी इन्हें जान पायें, इसके लिए आपको कुछ विचारों की व्यापकता और हृदयगत सच्चाई तथा ईमानदारी की जरूरत पड़ेगी। इसमें आपको समय और ध्यान देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देना पड़ेगा।

लोग रोजी कमाने और सांसारिक जरूरतों को पूरा करने में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत कर देते हैं। हम काम इसलिए करते हैं कि अपना

और अपने प्रियजनों के जीवन को जितना संभव हो, उतना सुखी बना सकें। जब समय मिलता है तब हम राजनीति, खेलकूद, दूरदर्शन अथवा किसी ताजा गपशप में अपना ध्यान लगा देते हैं। हममें से जो दिव्य से अपने प्रत्यक्ष आन्तरिक सम्पर्क की शक्ति को जानते हैं, उनके लिए जीवन इन सब से कुछ अधिक भी है। खेद की बात है कि सुसंवाद अधिक व्यापक रूप से लोगों को पता नहीं है। जीवन के सभी संघर्षों का समाधान तो हमारे भीतर ही निहित है और हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें पता है कि स्वर्ग हमसे साँस भर की दूरी पर ही तो है। क्षमा करें, यदि हम अति उत्साह में ऐसी बातें कह रहे हैं, जिससे आपके विवेकी मन को चोट लगे, किन्तु हम जो देख चुके हैं और जो जान चुके हैं उसके पश्चात् हमारे लिए चुप रहना कठिन है।

हम जो अपने को गुरू माँ चिंग हाई का शिष्य मानते हैं तथा उनकी पद्धति (क्वान यिन पद्धति) पर आचरण करने वाले अपने साथियों के साथ आपको यह प्रवेशिका इस आशा के साथ भेंट कर रहे हैं कि यह आपको दिव्य परितोष के अपने निजी व्यक्तिगत अनुभव के और अधिक नजदीक पहुंचने में मददगार साबित होगी और ऐसा चाहे हमारी गुरू माँ के कारण हो अथवा अन्य किसी के।

गुरू माँ चिंग हाई चिन्तन-मनन, आन्तरिक उपासना और प्रार्थना के अभ्यास के महत्व के बारे में शिक्षा देती हैं। वे बताती हैं कि यदि सचमुच इस जीवन में सुखी होना चाहते हैं, तो हमें अपने अन्दर निहित दिव्य रूप को खोजना पड़ेगा। वे बताती हैं कि प्रबोधन कोई गोपनीय अथवा ऐसी बात नहीं है, जिसे हम हासिल नहीं कर सकते और इसे वही लोग प्राप्त कर सकते हैं, जो समाज से पलायन कर लेते हैं। उनका उद्देश्य हमारे अंदर मौजूद दिव्य को जगाना है और इस दौरान हम अपने सामान्य जीवन को जीते रह सकते हैं। उनका कहना है: बात ऐसी है, हम सब सत्य जानते हैं किंतु हम उसे भूल जाते हैं। इसलिए, कभी-कभी किसी ऐसे व्यक्ति को आना पड़ता है जो हमें यह याद दिलाए कि हमारे जीवन का प्रयोजन क्या है। हमें सच की खोज क्यों करनी चाहिए। हमें चिंतन-मनन का अभ्यास क्यों करना चाहिए और क्यों हमें परमेश्वर अथवा बुद्ध अथवा किसी भी दूसरे को जिसे हम ब्रह्माण्ड में सर्वशक्तिमान मानते हैं उसमें विश्वास करना चाहिए। गुरू माँ किसी से यह नहीं कहती कि उनका अनुसरण करो। वे तो केवल अपने प्रबोधन को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करती हैं, ताकि दूसरे लोग अपनी चरम मुक्ति प्राप्त कर सकें।

यह पुस्तिका परम गुरू माँ चिंग हाई की शिक्षा-प्रवेशिका है। कृपया ध्यान दें कि इस पुस्तिका में संकलित गुरू माँ चिंग हाई के व्याख्यान, उनकी टिप्पणियां और उनके प्रवचनों के उद्धरण, उनके विभिन्न भाषणों, टंकणों और रिकार्ड रूप में जारी बोलों से लिए गए हैं। कई तो दूसरी भाषाओं से अनुवाद की गई हैं। इस पुस्तिका में इन्हें संपादित करके प्रस्तुत किया गया है। वैसे हमारा अनुरोध है कि आप उनके मूल आडियो अथवा वीडियो टेप देखें व सुनें। इससे आपको गुरू माँ की उपस्थिति का कहीं अधिक समृद्ध अनुभव होगा, अपेक्षा इसके कि आप इन लिखित शब्दों को पढ़कर अनुभव प्राप्त करें परन्तु निस्संदेह उन्हें साक्षात् रूप में देखना ही पूर्ण अनुभव है।

कुछ लोगों के लिए गुरू माँ चिंग हाई सचमुच मातेश्वरी हैं और कुछ के लिए पितृ-तुल्य हैं और कुछ के लिए वे प्रियतमा हैं। और कुछ नहीं तो वे इस संसार में उपलब्ध सर्वोत्तम मित्र तो हैं ही। उनका जन्म हमें कुछ देने के लिए हुआ है, लेने के लिए नहीं, अपनी शिक्षा, सहायता अथवा दीक्षा-संस्कार के लिए गुरू माँ कुछ भी नहीं लेती हैं। आपसे अगर वे कुछ लेंगी भी तो केवल आपकी यातना, आपका दुख और आपकी पीड़ा। लेकिन वह भी तब जबकि आप ऐसा चाहें।